विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। –प्रेमचंद

हरीतकी एक उत्तम रसायन और प्रभावी औषधि है

हरीतकी को आयुर्वेद की प्राचीन संहिताओं में पथ्यकारी, रसायन व उत्कृष्ट औषधि माना गया है। फलों की बनावट के आधार पर हरीतकी या हरड़ को विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती व चेतकी नामक 7 प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। यूनानी चिकित्सा में इसे प्राय: हलेलह-स्याह (सूखकर काली हो गयी हरड़), हलेलह-ज़र्द (अधपकी पीले रंग की हरड़), और हलेलह-काबुली (पूर्ण परिपक्व हरड़) में वर्गीकृत किया जाता है। समकालीन वैज्ञानिक शोध में वर्ष अप्रैल 2024 तक 2000 शोधपत्र हरीतकी में प्रकाशित हो चुके हैं।

राजबल्लभ निघण्टु में वर्णित एक मनोहारी लाक्षिणकता देखिये:– यस्य माता गृहे नास्ति, तस्य माता हरीतकी। कदाचिद् कुप्यते माता, नोदरस्था हरीतकी।। अर्थात, जिसकी माँ घर पर न हो, उसकी माँ हरीतकी है। माता तो कभी-कभी नाराज भी हो सकती है, परन्तु उदरस्थ हरड़ कभी भी हानिकारक नहीं होती। इसी प्रकार मदनपाल निघण्टु में दृष्टव्य है:– हरते सर्वरोगांश्च तस्मात् प्रोक्ता हरीतकी।। अर्थात हरीतकी नाम इसलिये पड़ा, क्योंकि यह सब रोगों का नाश करती है। जैसा कि आचार्य वाग्भट ने अष्टांगहृदय में लिखा है (अ.हृ.उ. 39.147): गुडेन मधुना शुण्ठ्या कृष्णया लवणेन वा।द्वे द्वे खादन् सदा पथ्ये जीवेद्वर्षशतं सुखी।। इसके अतिरिक्त भी ऋतुओं, रोगों और परिस्थितियों के अनुसार, आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से, हरीतकी को गुड़, शहद, शुंठी, काली मिर्च, सैंधव लवण, मिश्री, या पिपली के साथ ग्रहण करने के अनेक योग आयुर्वेद की संहिताओं में निर्दिष्ट हैं। संहिताओं में तो बहुत विस्तृत वर्णन है, पर उस सबका निचोड़ आचार्य चरक का यह महावाक्य माना जा सकता है(च.सू. 25.40): हरीतकी पथ्यानाम्। अर्थात पथ्यकारी द्रव्यों में हरीतकी सर्वश्रेष्ठ है।

भारत के प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य डॉ. डी.सी. कटोच, जिनका चिकित्सा में लंबा अनुभव है, का अपने अनुभवजन्य ज्ञान के आधार पर स्पष्ट मत है कि हरीतकी प्रयोग के कुछ मूलमन्त्र हैं जिन्हें प्रत्येक आयुर्वेदाचार्य को ध्यान रखना चाहिये। कोई भी रोग व रोगावस्था जो प्रधानत: कफात्मक, कफपित्तात्मक, क्लेदात्मक, रस-रक्त-मांस, मेद-मज्जा-शुक्र या धातुदुष्टि के प्रकरण, स्त्रोतोसंगात्मक, आवरणात्मक, मलावरोधात्मक या अग्निमान्द्यात्मक हो, वहाँ हरीतकी व हरीतकी के योगों का युक्तिपूर्वक प्रयोग करने से सफल चिकित्सा होती है।

हरीतकी और आमलकी लगभग समान गुण वाली प्रजातियाँ हैं। हरीतकी कसाय रस प्रधान तथा आमलकी अम्ल रस प्रधान द्रव्य है। हरीतकी में भी आमलकी की तरह लवण रस को छोड़कर शेष सभी पाँच रस पाये जाते हैं। यह उष्णवीर्य, त्रिदोषनाशक, मधुरविपाक लघु तथा रसायन है। हरीतकी का उपयोग रसायन एवं पथ्य के रूप में तो होता ही है, साथ ही श्वास, कास, प्रमेह, अर्श, शोफ, कुष्ठ, ग्रहणी, हृदय रोग, उदर रोग, मूत्र रोग, त्वचा रोग, विषम ज्वर, मुख रोग, अल्सर, उल्टी, दस्त, उदर-पीड़ा आदि अनेक रोगों को उपचारित करने में भी यह उपयोगी है। यूनानी मेडिसिन में इसे ठंड तथा सूखी माना जाता है और इसका उपयोग आँखों एवं दिमाग के टॉनिक के रूप में, डायरिया, अर्श, लकवा, सिर दर्द, मिर्गी, याददाश्त, रक्तशोधक, अर्श एवं कुष्ठ आदि के सन्दर्भ में होता है। हरीतकी के बारे में 5000 वर्ष पूर्व आयुर्वेद की संहिताओं में अंकित तथ्य, आधुनिक वैज्ञानिक शोध में भी यथावत सिद्ध पाये गये हैं।

हाल ही में हुये अध्ययन बताते हैं कि हरीतकी मल्टी-ड्रग रेसिस्टेंट हैजा (कॉलरा) जीवाणुओं के विरुद्ध प्रभावी है। विसूचिका (हैजा या कॉलरा) महामारी के रूप में संक्रामक आंत्रशोथ है जो वाइब्रियो कॉलेरी नामक जीवाणु के एंटेरोटॉक्सिन उत्पन्न करने वाले उपभेदों के कारण होता है। यह बीमारी इस जीवाणु द्वारा दूषित भोजन या पानी से फैलती है। प्राय: पानी या भोजन का दूषण हैजे के वर्तमान रोगी के माध्यम से होता है। ऐसा माना जाता था कि हैजे का स्त्रोत स्वयं मानव होता है, लेकिन अब ज्ञात हो चुका है कि जलीय वातावरण भी इस जीवाणु के स्त्रोत हो सकते हैं।

हरीतकी पर वर्ष 2024 तक 280 इन-वाइट्रो (लैब में) तथा इन-वाइवो (प्राणियों में) अध्ययन हुये हैं। साथ ही 1350 से अधिक शोधपत्र हैं जहाँ हरीतकी एकल या एक सह-द्रव्य है। इनमें से 600 शोधपत्र तो मूलत: हरीतकी पर ही हैं। जैसा कि प्राय: आयुर्वेदिक औषधियों के साथ अभी तक की स्थिति रही है, आयुर्वेदिक चिकित्सा की समग्रता को समाहित करते हुये क्लीनिकल ट्रायल्स बहुत कम हैं। फिर भी, वर्ष 2024 तक 100 क्लीनिकल ट्रॉयल्स या क्लीनिकल स्टडीज प्रकाशित हुये हैं।

हरीतकी अब आधुनिक बायोमेडिसिन में भी एक लोकप्रिय औषधि है। यह आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, होम्योपेथी, ऐलोपेथी, फाइटोमेडिसन आदि पद्धितयों में प्रयुक्त हो रही है और प्रभावी है। हरीतकी स्वतंत्र रूप से आयुर्वेद में रसायन तो है ही, यह त्रिफला के योग के रूप में तथा अन्य विविध औषधियों के साथ जुड़कर एक हजार से अधिक आयुर्वेदिक औषधियों में प्रयुक्त होती है।

आश्चर्यजनक बात यह है कि हरीतकी पर उपलब्ध ज्ञान आयुर्वेद का प्राचीन ज्ञान होने के बावजूद बड़ी संख्या में पेटेंट प्राप्त कर लिये गये हैं। वर्ष 2019तक1226 ऐसेपेटेंट्स की जानकारी है जिनमें हरीतकी या तो अकेले द्रव्य के रूप में, या हरीतकी से प्राप्त फाइटोकेमिकल्स, या हरीतकी और अन्य द्रव्यों के योगों पर पेटेंट कराये जा चुके हैं। गुणधर्म या प्रभाविता जिसके लिये पेटेंट दिया गया है, उनमें से एक भी ऐसा नहीं है जिसका आयुर्वेद आधुनिक वैज्ञानिक शोध में हरीतकी को विविध रोगों की आयु-आधारित रोगोत्पत्ति को रोकने एवं उपचार में उपयोगी और सुरक्षित पाया गया है।

हरीतकी अब आधुनिक बायोमेडिसिन में भी एक लोकप्रिय औषधि है। यह आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, होम्योपेथी, ऐलोपेथी, फाइटोमेडिसन आदि पद्धितयों में प्रयुक्त हो रही है और प्रभावी है। हरीतकी स्वतंत्र रूप से आयुर्वेद में रसायन तो है ही, यह त्रिफला के योग के रूप में तथा अन्य विविध औषधियों के साथ जुड़कर एक हजार से अधिक आयुर्वेदिक औषधियों में प्रयुक्त होती है। इसी प्रकार 2000 से अधिक प्रोपराइटरी आयुर्वेदिक औषधियों में यह एक सह-द्रव्य के रूप में प्रयुक्त होतीहै।

आधुनिक शोध पर विश्व के महत्वपूर्ण जर्नल्स में प्रकाशित शोध-पत्रों में इन-वाइट्रो, इन-वाइवो एवं क्लीनिकल अध्ययनों का निचोड़ यह है कि हरीतकी में एंटीऑक्सीडेंट, रेडियोप्रोटेक्टिव, कीमोप्रिन्टेटिव, हिपेटोप्रोटेक्टिव, कार्डियोप्रोटेक्टिव, रीनोप्रोटेक्टिव, अडाप्टोजेनिक, हाइपोलिपिडमिक, हाइपोकोलेस्टेरोलिमिक, इम्यूनोमोड्युलेटरी, एंटीबेक्टीरियल, एंटीफंगल, एंटीटीवायरल, एंटीप्रोटोजोअल, एंटीकार्सीनोजेनिक, एंटीम्यूटाजनिक, एंटीडायबिटीज, एंटीइन्फ्लेमेटोरी, एंटीआर्थराईटिस, एंटीअनाफाइलेक्टिक, एंटीअल्सर, एंटीस्पाजमोडिक, एंटीकेरीज, एंटीअल्जीमर, एंटीएलर्जिक, वुंड-हीलिंग, उदर-विकार-रोधी आदि गुण पाये जाते हैं। ये सभी गुण वस्तुत: विविध प्रकार के फाइटोकेमिकल्स, जैसे पोलीफिनाल्स, फ्लेवोनोइड्स, एन्थोसाइन्स, ग्लाइकोसाइड्स, अल्कलोइड्स, टरपीन्स आदि के कारण हैं। इनमें फिनोलिक एसिड श्रेणी के द्रव्यों में एलाजिक एसिड, चेब्यूलिक एसिड, नियोचेब्यूलिक एसिड, गेलिक एसिड, चेब्यूलिनिक एसिड, तथा चेब्यूलाजिक एसिड आदि मुख्य हैं जो हरीतकी को चिकित्सकीय गुण प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त बेन्जोइक एसिड समूह में हाइड्रोबेन्जोइक एसिड तथा उसके डेरीवेटिव्स, सिनेमिक एसिड समूह हाईड्रोक्सीसिनेमिक एसिड के डेरीवेटिव्स, फ्लेवोनोइड समूह के द्रव्यों में फलेवोनोल एग्लीमोन्स, एमीकोन्स तथा ग्लाइकोसाइड्स इत्यादि विविध चिकित्सकीय भूमिका निभाते हैं।

शोध में इस बात के ठोस प्रमाण मिले हैं कि हरीतकी में एंटीऑक्सीडेंट तथा दर्दनाशक गुण हैं। साथ ही, एक अध्ययन में पाया गया है कि एक हज़ार मिलिग्राम हरीतकी की एक खुराक स्वस्थ व्यक्तियों को देने से दर्द सहने की क्षमता बढ़ने के साथ तथा दर्द के प्रारंभ की सीमा बढ़ जाती है। इस प्रकार यह जोडों के दर्द, ऑस्टियो आर्थराइटिस, रेम्युटॉइड आर्थराइटिस आदि ऐसे रोगों में विशेष लाभकारी है, जिनमें दर्द एक महत्वपूर्ण लक्षण है। हाल ही में हुआ 105 लोगों पर 90 दिन तक चला क्लिनिकल ट्रायल स्पष्ट करता है कि हरीतकी, हरिद्रा और शल्लकी का योग जोड़ों के ओस्टियो आर्थराइटिस के विरुद्ध प्रभावी है। हरीतकी-युक्त द्रव्य का एक अन्य क्लिनिकल परीक्षण 130 मोटापा-ग्रस्त लोगों पर किया गया। इसमें भी पाया गया कि यह द्रव्य न केवल मोटापा घटाने में उपयोगी है बल्कि दर्द की स्थिति और लिपिड प्रोफाइल भी सुधरी। एक रैंडमाइज्ड डबल-ब्लाइंड क्नीनिकल परीक्षण के दो सप्ताह तक चले शोध से ज्ञात हुआ है कि हरीतकी के घोल से प्रतिदिन दो बार कुल्ला करने से माइक्रोबियल प्लॉक व जिंजिवल इन्फ्लमेशन कम हुआ तथा मुंह में लार की अम्लीयता-क्षारीयता सम हुई। इसी प्रकार हरीतकी अल्जीमर रोग पर भी उपयोगी पायी गयी है।

हाल ही में हुए एक डबल-ब्लाइंड, प्लेसीबो-नियंत्रित क्लिनिकल ट्रायल, जिसमें प्रतिभागियों को उपचार और प्लेसीबो समूहों में विभाजित किया गया था तथा उन्हें 4 सप्ताह के लिए दो विभाजित खुराकों में हरड़ या प्लेसिबो के 500 मिलीग्राम के छह कैप्सूल दिए गए। मरीजों की संज्ञानात्मक हानि, सकारात्मक, नकारात्मक, अवसाद/चिंता, और उत्तेजना/गतिविधि लक्षणों का मूल्यांकन स्क्रीन फॉर कॉग्निटिव इम्पेयरमेंट्स इन साइकेट्री (एससीआईपी) और सकारात्मक और नकारात्मक सिंड्रोम स्केल (पीएएनएसएस) के प्रासंगिक उप-स्तरों का उपयोग 4 सप्ताह तक काके परीक्षण किया गया था। संज्ञानात्मक हानि, नकारात्मक लक्षण और उत्तेजना/गतिविधि में कण्ट्रोल की तुलना में हरड़ वाले समूह में काफी सुधार पाया गया। साथ ही कोई गंभीर प्रतिकूल प्रभाव भी नहीं देखा गया गया। अत: हरड़ क्रोनिक स्किज़ोफ्रेनिक रोगियों में संज्ञानात्मक हानि, नकारात्मकता और उत्तेजना/गतिविधि लक्षणों में सुधार कर सकती है।

अंतत: आयुर्वेदिक संहिताओं, आधुनिक वैज्ञानिक शोध एवं अनुभव-जन्य समझ से यही सिद्ध होता है कि हरीतकी के विविध योग स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोगी व्यक्ति को रोग-मुक्त करने में सक्षम हैं।

प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक ने वैद्यों के समूह के समूह के सन्दर्भ में लिखा है कि विद्वान वैद्यों का समूह स्वास्थ्य से जुड़ी तमाम तरह की शंकाओं और पचड़ों को निपटाने में श्रेष्ठ होता है (वैद्यसमूहोनि: संशयकराणं श्रेष्ठम् –च.सू.25.40 आंशिक)। देश के दिग्गज आयुर्वेदाचार्यों का ऐसा ही समूह कायसम्प्रदाय है। हरीतकी पर यह चर्चा कायसम्प्रदाय में सम्मिलित सभी आयुर्वेदाचार्यों और उनके जीवनदायी कार्यों को समर्पित है। वास्तव में हरीतकी की तरह कायसम्प्रदाय में सम्मिलित आयुर्वेदाचार्य भी सर्वरोगहर हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

मानव जीवन में अंक सात (7) की महिमा और व्यापक महत्व

प्रो. वीर बहादुर सिंह

पछल एक सम्पादकाय लख "अजब तेरी कुदरत गजब तेरा खेल" में मैं प्रकृति के कुछ प्रमुख रहस्यों पर सामान्यजन की जानकारी के लिए काफी कुछ लिख चुका हूँ, जिसे कई पाठकों ने बहुत सराहा। इस लेख में भी गिनती के सात अंक के बारे में काफी कुछ संकलित जानकारी लिखने जा रहा हूँ।

वैसे तो सभी धर्मों में कोई न कोई संकेत सभी ने अपनाया हुआ है लेकिन यहाँ मैं सनातन अथवा वैदिक धर्म में उपयोग में लाये जा रहे अंक सात से सम्बंधित कतिपय अवसरों की ही जानकारी दूंगा। दैनिक जीवन में हम अपनी व्यस्तता के रहते इन पर कभी गौर नहीं करते और बिना कुछ जाने-समझे अंक सात (7) का उपयोग करते रहते हैं। भौतिक स्थितिओं में सात अंक के उपयोग की बात पहले आरम्भ करते हैं।

1. एक सप्ताह को सात दिवस में बांटा गया है यथा; रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पति वार, शुक्रवार और शनिवार। ये सभी नाम सूर्य और उसके ग्रहों के नाम पर हैं। इसलिए समय या काल की गणना दिनों से आरम्भ होकर माह और वर्ष तक चलती है।

2. वर्षा के समय आकाश में सूर्य की विपरीत दिशा में बने इंद्रधनुष में भी 7 रंग होते हैं। सबसे बाह्य परिधि इंद्रधनुष में लाल रंग की होती है जो मनोभाव, कामना, तेजस्विता या जीवंतता और आवेग का द्योतक है। दूसरी परिधि नारंगी रंग की जो धैर्यता, सहनशीलता व् व्यक्तित्व दर्शाता वहीँ तीसरी परिधि पीली रंग प्रसन्नता दर्शाती है। इंद्रधनुष में चौथा व्रत हरा रंग का जो वृद्धि एवं नवीनीकरण अथवा प्रकृति दर्शाता है। तदुपरांत पांचवा व्रत नीला जो शान्ति, व् प्रभुत्व का प्रतीक है और छठा वृत्त जामुनी जागरूकता व् अंतर्ज्ञानि और सातवा बैंगनी व्रत सृजनकर्ता, आध्यत्मता और कल्पनाशीलता को दर्शाता है। इस प्रकार प्रकृति में इन्द्रधनुष के रंग भी प्राणिमात्र को प्रभावित करते हैं।

3. शरीर में सात चक्र होते हैं जिन पर लोग मैडिटेशन के समय एकाग्र होकर निहारते हैं और धीरे-धीरे मुला धार से चढ़ कर मस्तिष्क में ब्रह्मरंध्र तक ध्यान साधते हैं वहां पहुंच कर साधक को जानने के लिए कुछ शेष नहीं रहता। इन चक्रों के नाम हैं; मूलाधार,-रीढ़ की हड्डी या कहें सुषुम्ना नाड़ी का नीचे अंतिम छोर। इसके ऊपर स्थित है स्वाधिष्ठान जिसे सेक्रल चक्र भी कहते हैं, यह नाभि के ठीक नीचे स्थित है। तीसरा चक्र इसके ऊपर मणिपुर, अनाहत चक्र (हृदय), विशुद्ध चक्र (गला), आज्ञा चक्र दोनों भौंह के बीच और आखिर में सबसे ऊपर सहस्त्रार चक्र। इस सभी चकों का विवरण देना इस लेख का उद्देश्य नहीं है। नवरात्रि में देवी उपासना के समय साधक एक एक कर इन्ही चक्रों पर मन स्थित करता है। यहाँ प्रत्येक चक्र का विवरण और उपयोगिता बताना लेख का उद्देश्य नहीं है इस पक्ष पर फिर किसी लेख में वर्णन करेंगे।

4. संगीत के भी सात स्वर हैं यथा स, रे, ग, म, प, ध, नी,,,,,,सभी वाध्य यंत्रो को बजाने के लिए इन्ही स्वरों का समुचित प्रयोग किया जाता है।

5. आकाश में सप्त ऋषि तारा समूह- उत्तर दिशा में ध्रुवतारे के पास सात तारों का एक समूह अंग्रेजी के सेवन अंक (7) की बनावट का विध्यमान है। इन सातों तारों का यह समूह सदैव सात के आकार में ही रहता है दिशा चाहे कोई भी हो। दूसरी खूबसूरत बात इस तारा मंडल की यह कि ध्रुव तारे के इर्दगिर्द बना रहता है। पूरी रात के इस तारा समूह की स्थिति को यदि हम कागज़ पर अंकित करते चले और फिर चारों सात के बिंदुओं को पहले आपस में लाइन से जोड़ दें तो सनातनी जीवन शैली में पवित्रता के रूप में प्रयुक्त होने वाला पवित्र चित्र (स्वास्तिक) बन जाता है। जिसे घर दूकान, मोटर गाड़ी आदि सभी पर हल्दी अथवा सिंदूरी रंग में पुरोहित लोग बना देते हैं। वर्तमान में प्रेस में छपे हुए रंगीन स्वास्तिक स्टीकर भी मिल जाते हैं। लेकिन यह स्वास्तिक चिन्ह का उद्गम हमारा आकाशीय सप्तऋषि मंडल और उसके द्वारा ध्रुव तारे के चारो तरफ विभिन्न दिशाओं में निर्मित दर्शित आकार ही हैं। इस तारा समूह के तारों के नाम भी प्राचीन ऋषिओं यथा, कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और भरद्वाज। कहते हैं हर काल के ऋषि अलग होते हैं उपरोक्त केवल वर्तमान काल के हैं। विभिन्न पुराणों/ग्रंथों में इनका उल्लेख मिलता है।

6. कॉन्टिनेंट्स- मुख्य तौर पर तो सात ही हैं। जिसमे एशिया, अफ्रीका, यूरोप, उत्तर और दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और अंटार्टिका महादीप शामिल हैं, दुनियां के सभी देश इन्ही महाद्वीपों में आ जाते हैं। एशिया महाद्वीप सबसे बड़ा और ऑस्ट्रेलिया सबसे छोटा है।

7. महासागर और सागर- जिन्हे अंग्रेजी में ओसियन कहते हैं सात ही हैं। जिनमे पांच बड़े हैं–प्रशांत, अटलांटिक, हिन्द महासागर, आर्कटिक और अंटार्टिक दक्षिण में। अरब सागर और भूमध्य सागर को मिला कर सख्या सात हो जाती है। इनमे सबसे गहरा और शांत प्रशांत महासागर है जिसमे वायु मंडलीय उपद्रव नहीं उठते। अब कुछ अन्य सात को भी जान लें।

8. विवाह के समय पंडित वर-वधु से अग्नि के सात फेरे लगवा कर कुछ वादे/कसम दिलवाता है।

9. नव रात्रि में सातवा दिन ही माता काली को समर्पित होता है।

10. मानस में महात्मा तुलसीदास ने ग्रन्थ में सात काण्ड ही लिखे हैं।

11. मुस्लिम संप्रदाय में भी अंक 786 पवित्र माना जाता है। जो अंक सात से ही आरम्भ होता है। हिन्दुओं की तरह मुस्लिम इसे पवित्र मान कर इसका उपयोग ऐसे करते हैं जैसे हिन्दू ॐ या स्वास्तिक चिन्ह। तो यह सात अंक की महिमा जो में जानता था आपके साथ बांटने का प्रयास किया है। पाठक यदि चाहें तो इनके अतिरिक्त और भी इनमे इज़ाफा कर सकते हैं। आशा करता हूँ पाठकों विशेष रूप से युवा को यह जानकारी अच्छी लगेगी।

–प्रो. वीर बहादुर सिंह,
डेरी एवं खाद्य विज्ञ, सेवा निवृत
कुलपति, महाराणा प्रताप
कृषि एवं प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय, उदयपुर।

भवानीमंडी क्षेत्र में पिछले कई दिनों से गंदे पानी की सप्लाई होने से लोगों में रोष

भवानीमंडी (निसं)। लाखो रूपये खर्च होने के बाद भी उपखण्ड भवानीमंडी क्षेत्र में पिछले कई दिनों से गंदे पानी की सप्लाई की समस्या खत्म होने का नाम नहीं ले रही जिसके चलते क्षेत्र के लोगो में काफी रोष देखा गया है।

इस समस्या को लेकर कई बार कांग्रेस और भाजपा पार्टी के कार्यकताओ के आलावा समाजिक संगठन के पदाधिकारी उठा चुके है यहां तक भाजपा के कार्यकताओ ने संबंधित अधिकारी को गंदे पानी का स्वाद भी जलदाय विभाग कार्यालय के यहां प्रदर्शन कर चकाया था लेकिन थोड़े दिन सप्लाई ठीक आई उसके बाद यह समस्या बनी हुई है जिससे शहर वासियो को गम्भीर बीमारियों का खतरा बना हुआ है !

आज भी भवानीमंडी नगर के कई वार्डो में गंदे मटमैले पानी की सप्लाई हुई जिसे लोगो ने अपने काम में नहीं लिए वहीं भाजपा के नगर महामंत्री राजकुमार गुप्ता ने बताया की गर्ल्स स्कूल चौराहे से लेकर उषा कॉलोनी तक गंदे मटमैले पानी की सप्लाई है जिसे उपयोग में लेने से लोगो ने परहेज किया इसकी शिकायत की गई लेकिन कोई सुधार नहीं हुआ है।

इसके सुधार के लिए इस मामले को क्षेत्रिय विधायक ने भी उठाया था इसके आलावा नगर पालिका अध्यक्ष कैलाश बोहरा ने भी गंदे पानी की समस्या सुधारने के लिए शहर में पिप्लाद बांध से जल सप्लाई की जगह राजगढ़ बाँध से पेयजल देने की मांग की थी लेकिन अभी तक कोई सुधार नहीं हुआ है !

गौरतलब है की भवानीमंडी के सुलिया के यहां बना पिप्लाद बाँध जिससे शहर में पेयजल सप्लाई होती है जहां नगर सहित आसपास से निकलने वाले गंदे पानी के नालो का पानी पिप्लाद बाँध में जाकर सामिल होता है जिसे फिलटर करने के लिए फिलटर प्लांट भी लगा रखा है लेकिन गंदे पानी की समस्या आम बात हो गई यह भवानीमंडी सहित आसपास के क्षेत्र के बड़ी समस्या है इस गंदे पानी को समस्या से कम छुटकारा मिलेगा कुछ कहा नहीं जा सकता !

भवानीमण्डी में कई दिनों से नलों से गंदा पानी आ रहा है।

गणगौर बंदोरी सिंधारा आयोजित

रतनगढ़, (निसं)। शहर में महिलाओं व किशोरियों द्वारा गणगौर का पर्व आस्था भक्ति भाव से मनाया जा रहा है। शहर में गणगौर गीतों का गायन प्रात: गणगौर पूजन से शुरू होता है जो साय बनोरा व रात्रि में लोकगीतों से जारी रहती है।

रिनी कुएं के पास मोहल्ले की महिलाओं द्वारा सामूहिक गणगौर बनोरा व सिंघारा का आयोजन आस्था व भक्ति भाव से किया गया। उपस्थित महिलाओं व नवयौवनाओं ने लोकगीत गाकर गौर माता की पूजा अर्चना करके सुख समृद्धि की कामना की। महिला मंडल अध्यक्ष किरण देवी पारीक ने बताया कि गणगौर पर्व महिलाओं के लिए अखंड सौभाग्य प्राप्ति का पर्व है तथा विवाह योग्य किशोरियों मनपसंद भावी जीवनसाथी को पाने के लिए गणगौर पूजन करती है। उन्होंने संतोष सारस्वत की ओर से सभी का आभार भी प्रकट किया। इस अवसर पर पारंपरिक परिवेश में महिलाओं युवतियों ने गणगौर के लोक गीतों का आनंद लिया गीतों की प्रस्तुति से सभी को भाव विभोर किया। इस अवसर पर रेखा शर्मा, दुर्गादेवी, सुरभी सारस्वत ,माया देवी पुरोहित, नूतन, खुशबू पुरोहित, हेमलता स्वामी,अलका स्वामी सहित अनेकों महिलाएं व किशोरियां उपस्थित थी।

378 लोगों ने स्वैच्छिक रक्तदान किया

सीकर, (निसं)। सामाजिक क्रांति के अग्रदूत महात्मा ज्योतिराव फूले एवं संविधान निर्माता, भारत रत्न, बाबा साहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष में सीआर मैना मैरिज गार्डन राधाकिशनपुरा में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

■ **महापुरूषों को श्रद्धांजलि अर्पित की**

शिविर संयोजक राधाकिशनपुरा सरपंच रामलाल सैनी ने बताया महात्मा ज्योतिराव फुले एवं संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के चित्र पुष्प अर्पित कर शिविर का शुभारंभ किया गया। शिविर में 378 युवाओं ने मानव सेवार्थ रक्तदान कर महापुरूषों को श्रद्धांजलि अर्पित की। नटखट ग्रुप सीकर के विनोद सैनी व रामलाल सैनी द्वारा रक्तदातों को सफर बैग, प्रशस्ति पत्र भेट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर विजयपाल खीचड़ पूर्व सरपंच गोकुलपुरा, पूर्व विधायक रतनलाल जलधारी, विनोद सैनी नटखट ग्रुप सीकर, प्रेमचन्द सिंगोदिया, किशोर सैनी, अशोक वर्मा, जितेन्द्र देवठिया, एडवोकेट पूजा महरोली, बाजोर फाउण्डेशन के अध्यक्ष मोहन बाजोर, सुरेश दानोदिया, बीएल मील, सतेन्द्र कुड़ी, रामोतार बागड़ी, पार्षद सुरेश सैनी, डॉ. राजकुमार महरिया, सुरेश बागड़ी, डॉ. कमल किशोर, जयप्रकाश सैनी, विक्रम भादवाडी, राजेश बाकोलिया, श्रवण कांटिवाल, पंकज सैनी, नरेश सैनी, प्रकाश रॉयल, संजय खारिया, सुनील घोराणा, सुशील रेटा, संदीप भादवासी, मोतीराम कारोडिया, गगन कटारिया, योगेश सैनी, डॉ. वीरेन्द्र वर्मा, विकास दानोदिया, विनोद पंवार, बनवारी गुर्जर, जितेन्द्र काकड़वाल, अतिम आर्य, दिनेश चिरानियां, हिमांशु काकड़वाल आदि लोगों ने रक्तदाताओं की हौसल अफजाई की।

रक्तदान शिविर में लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिय।

राशिफल रविवार 7 अप्रेल, 2024

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र दिन 12:58 तक, ब्रह्म योग रात्रि 11:17 तक, वणिज करण प्रात: 6:54 तक, चन्द्रमा प्रात: 7:39 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 12:58 से सूर्योदय तक है। भद्रा प्रात: 6:54 से सांय 5:08 तक रहेगी। आज मास शिवरात्रि है। चतुरदशी तिथि का क्षय हुआ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:49 से 9:22 तक, लाभ-अमृत 9:22 से 12:24 तक, शुभ 2:03 से 3:36 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:15, सूर्यास्त 6:43

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

सिंह
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

धनु
घर-परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों पर संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कन्या
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा हो सकती है। आर्थिक मामलों में प्रगति होगी।

तुला
अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आज वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। मित्रों/रिश्तेदारों से अनबन हो सकती है।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

वृश्चिक
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
मानसिक तनाव दूर होगा। मन:स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। पारिवारिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।